मालीराम शर्मा

सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

अपनी तरफ से

● जो कुछ देखा—स्थूल सूक्ष्म—उसके ये कुछ बिम्ब है, ईमानदारी के साथ। इन बिम्बो को उभारने मे जो शब्द सहज भाव से आ गये, उन्हे जगह दे दी—बिना किसी भेद भाव के, छुआछूत के। इनके पीछे न कोइ आग्रह है न आस्था। हा, एक बात और है। कानो ने जहा कही पर जोर देकर कहा, उनकी बात अनसुनी नही की गई।

अन्त म मेरे दोस्त श्री जानकीप्रसाद उपाध्याय को धन्यवाद देना, अपनी ही शराफत का निर्वाह करना है। सचमुच, उन्होने मुझसे व मैन्युस्क्रिप्ट से समय-समय पर बडी मगज पच्ची की है।

—मालीराम शर्मा

नद निकेतन
बीकानेर (राजस्थान)

क्रम

ओवर्ज की रात

औबर्ज की रात

(मध्य एशिया की पष्ठभूमि म)

"टक्मी, टक्मी[1]"
'इ।नक यावह् ज्ञन ?[2]"
'ज्ञन, मरह्वह ।[3]'
"औवज्ञ ।[3]
'ज्ञन रबा दीवार ।[4]"
"मक खालिफ ।[5]'
'फदल[6]"
खुला दरवाज़ा,
दाखिल हुआ
चल दिया शेवरलट का लेटेस्ट मॉडल
चीरता हुआ
बगदाद की रशीद स्ट्रीट
जिसके दोना तरफ इतराता
नजर आता ह
अरवी हुस्न का हुजूम ।
गाल गाल गोरे गारे चेहर
किसी खास अन्दाज़ म
कट वाल
पहिन हुए काला जवाय[7]

---

१ कस हैं नीमन ? ठीक है ?
२ ठाक स्वागत है आपका
३ केवरा रात्रिक्लब
४ ठाक चौथाइ दीनार (ईराकी सिक्का)
५ कोइ बात नही स्वीकार है
६ पधारिये
७ बुर्कनुमा चागा

जस कि वकील का गाउन
काले बकग्राउण्ड म
उभर पडते थ
वे सीमटिक फीचर।
टक्सी चली जा रही थी
रोशनी की जगमगाहट म।
ऐसी रोशनी कि हिन्दुस्तान की दीवाली का
दिवाला पिट जाय हजार बार।
जश्न पर थी आम्मेतल ईराक,
जश्न पर थी अलिफ लला की नगरी
जश्न पर थी हारू अल रशीद की दुनिया,
जश्न पर था अलमामून का आलम
मशहूर थे यहा के हमाम
मशहूर थे यहा क हरम
मशहूर थी यहा की हूर
मशहूर था यहा का नूर
यह शबाब की नगरी
यह शराब की नगरी
शराब बहती थी इक तरफ,
दिजला बहती थी इक तरफ।
दावह दखते हो ?"
सामन है मादून स्टीट
वह खडा तिमथाल सादून का
कौन था सादून ?
छोडा न तवारीख को
क्या करते हो
कल की बात
जो गुजर गया
जीना था जिनको
जी लिये
अपने हिसाब स
अपने मय्यार से
सो रहे है
कब्र म

थक कर
मौन दो
क्या उखाड़ने हो
मुर्दों को
कब्र से ?
छोड दो बात
कल की,
परसों की,
बात करो आज की,
बात करो औरत की,
शहरजाद की गजाला की।
मिलेगी आर्टिस्ट
तुर्की यूनानी, अलमानी,
रोमानी, लबनानी
बात करो उनके नक्शों की,
निगाहों की,
यह लो आ गया औरत
मुबारक हो
आजकी कल और कला भी
फीमाला
इस दुनिया मे एक नई दुनिया
नई दुनिया के दस्तूर नये
आदाब नये, हिसाब नये।
आज का प्रोग्राम ?
बले है, बेलरिना है साल्सो है
टिवस्ट है, राक्न रोल है
फ्लोर शो की मिलेगी आर्टिस्ट
दूर दूर की
तहरान की, बरन की, हम्बर्ग की
टर्क हैं, जर्मन है, फ्रेंच हैं
इटालियन है स्वीडिश है,
ब्रुनेट है, नीग्रो है, पटीट हैं
बक्सम है, वम्पी है
कहिये, आपकी फरमाइश ?

बोलिये आपकी तलाश ?
हम चाहिये ब्लाण्ड
ऐसी कि
जिसमे जान हो
हसीन हो
कमसिन हो
अकमल हो
अजमल हो
यानी मेरे कहने का मतलब
मेरे दिमाग मे शक्ल है औरत की
एक सूरत है औरत की
एक आइडिया है औरत का
माफ कर अर्ज है
छोडिये बकले का
छोडिये लोक का
ह्यूम को
काण्ट का
हेगल का
नित्शे का।
औरत
एक कमोडिटी है,
चीज है, वस्तु है
खरीद की, बिक्री की,
मिलती है
कीमत पर।
हर चीज की कीमत
प्राइस टग लगा रहता है
औरत एक आइडिया नही,
उसका स्थान न दिल है
न दिमाग है
वह रहती है
पॉकिट मे,
पर्स मे।
खरीद ला

दूकान से
शो रूम से
बाज़ार से
बाली म
नीलाम मे,
चीज़ की कण्डीशन होती है
फस्ट हैड, सेकिण्ड हैड
क डम, कटपीस,
कीमते
घटती है
बढती है
कण्डीशन के मुताबिक
डीमाण्ड के मुताबिक
सप्लाई क मुताबिक
हा, यह बात भी है
कभी इ फ्लेशन
कभी डिफ्लेशन।
खर, जाने दीजिये,
हाजिर करूँ
कोइ डिश
चटपटी
कोई खिलौना,
कोई साथी
कोई गुडिया
आज की रात के लिए,
पसद आपकी
यह नही तो वह
वह नही तो वह
पसद कीजिए
अभी बुलाये देता हूँ
अभी दिखाये देता हूँ
देखिये ज़ात से
बात से
परखिय

ग्राहक की नज़र से
खरीददार की नज़र से,
"डार्नी डिअर,
कम हिअर,
आप से मिलिये।"
'डू डू
"डू डू
फाइन मजूर
ते रहा
फुन नाइट।'
"ओके चीरिओ
गुड लक,
गुड एडवेन्चर
लगी है मेज कोने में
नम्बर एटी सेवन
केबिन के पास।"
घुसते ही हॉल में,
हाल ही बदल गये,
बज रहा था कनाटा
छाया हुआ था सन्नाटा
चहक रही थी बुलबुल
कौन थी?
पता नहीं
स्पेनिश थी कि डेनिश
तर रही थी आवाज़
थिरक रही थी आवाज़
क्या थी वह जुबान?
क्या थी उसकी थीम?
समझ में नहीं आ रही थी जुबान
समझ में नहीं आ रही थी थीम
पर लग रहा था ऐसा
इस गीत में मैं हूँ
इस थीम में मैं हूँ।
माई डोली, माई डार्लिंग!

जचती हो खूब
मजती हो खूब
दुलहिन सी
तेरे सुनहले बाल
ये सोने के बाल
तर रह है
झूम रहे है
झूल रहे है
तेरे कधा पर
यह झूमता यौवन
यह पुकारता यौवन
यह ललकारता यौवन
जगा देता है
जीने की हसरत
देखते हो, यह निजोलाइट !
यह सारा ममा, रगीन छत,
बठे हुए लाग, टूज म
ब्रीज म,
सबके पास बात एक,
थीम एक
तरीका एक
मक्सद एक !"
हा, मैं दुलहिन
हर शाम की दुलहिन
शाम के साथ सुहाग आता
सुबह के साथ दुहाग आता
शाम के साथ प्यार आता
शाम के साथ यार आता
शाम के साथ,
प्यार म ज्वार आता
सुबह के साथ उतार आता
शाम है, जाम है
शाम है शराब है
शाम है शबाब है

हर शाम मेरी शादी
हर शाम मेरी हनीमून
मैं रात की रानी
मैं रात की बहार
हसरत की बात न कर,
जिन्दगी कमरत है
जिस्म की जहन की
आ गई शाम, पर कहा है जाम ?
जाम ला शराब ला ह्विस्की ला
जि दगी स्वय एक बोतल,
बोतल म तूफान छिपा
बोतल मे ज्वाल छिपा,
खुलने दो बोतल
आने दे तूफान
उड चले तूफान म
ह्विस्की के सहार
कुछ भी हो ह्विस्की हो,
कोई भी हो,
ह्वाइटहोस हो,
जोनीवाकर हो,
हेग हो, मार्टिन्स हेड हो,
दवज हो।
वह खुली बोतल,
वह उफनी शराब,
इसका उफान देख,
इसका उबाल देख
छा जायेगी सर पर
उडेगा होश
जागेगा जोश,
जागेंगे अरमान,
इसका रग देख,
रूप देख,
शराब मे रहती है जिन्दगी,
शराब मे पलती है जिन्दगी,

शराब खून है ज़िन्दगी का
शराब पमाना है ज़िन्दगी का।
"स्मोक हनी ?"
'आइ डू
' तो जला सिगरेट जला,
छा जाय धुआ उभर आयें कुछ चित्र
धुएँ से।"
"ज़िन्दगी अपने आप म
एक स्मोकस्क्रीन है।'
छोड दो फलसफी,
मुझे पीनी है शराब
तेरे होठा मे
पूरी करनी है साध
जो धुक रही थी
एक अर्से स
इस सिगरेट की तरह
कि कोई मिल ब्लाण्ड
जो हो लाख मे एक
जब से तुम्ह देखा है
खो गया हू मैं,
उलझ गया हूँ मैं,
तेरे वाला के
लूप्स मे
टन स मे
ट्विस्टस मे
यह नही कि देखी नही औरत ?
देखी है औरत
बहुत ही नज़दीक स
काली आखें, भूरी आख
बिल्ली जसी, हिरणी जसी
मछली जसी
पर ये नीली आख
जगा देती ह प्यास
न जाने किस जन्म की,

पीता रहूँ शराब
जो बरसती है इन आँखों से
क्या कहा तुमने ?
'हिन्दुस्तान की औरत',
हिन्दुस्तान में औरत नहीं
मर गई औरत
रह गई सोहरत
वह तो बण्डल है, पैकिट है
लिपटा हुआ, डपटा हुआ,
एक बन्द लिफाफा
झुकी हुई आखें
कतरी हुई पांखे
न जाने किस गुनाह के कारण
उठती नहीं आँखें,
सिर से पैर तक ढकी हुई
बीमार सी बेकार सी
रोती है हँसती नहीं
मुरझा जाती है खिलती नहीं
आखों में बेबाकियां कहां ?
सीने में उभार कहां ?
मर्चस्टिक की औरत
मिनी में जचती नहीं,
लवली लेग्स में फबती नहीं,
वह इश्तहार है औरत का,
इजहार नहीं,
मेरा वश चले तो नीलाम कर दूं
बेच दूं, एनमास
एन ब्लोक
लाऊँ एक ऐसी औरत का बीज,
एक हाईब्रिड औरत का बीज,
बिखेर दूं, धरती पर
फिज़ा में, हवा में
गर लग जाए वह पौधा
बदल जाये हिन्दुस्तान की तकदीर,

फूट पडे एक नई तहजीब,
क्यो सडती है वह हरमों मे ?
बधी पडी है कर्मों मे,
धर्मों मे,
लकीर का फकीर
पूजती रहती है
भाटे को, भूत को
चाटती रहती है रेत
इस व्यवस्था की
जो जीर्ण है
शीर्ण है
कीचड है।
मलती रहती है कीचड
परम्परा का, ट्रेडीशन का
चाव मे, भाव मे।
मैं कहता हूँ
फेंक दे बुर्का, तोड दे दीवार
शर्म की
धर्म की
समाज की
नमाज की
स्टेज पर आ, सीना खोलकर,
कह दे ऐलान से
आज से आज़ाद हूँ,
मुक्त हूँ, उन्मुक्त हूँ
प्यार मे, व्यवहार मे
आहार मे, आचार मे
हटा लो तुम्हारे बुत,
मै न सीता हूँ न सती हूँ
मरूँगी न जलूगी
किसी लूले के लिये
लगडे के लिये
बहरे के लिये
मुफलिस के लिए,

मैं राग की ढेरी नही,
मैं आग हूँ
पराग हू
राग हूँ
अनुराग हूँ
घुटुगी नही, धुकुगी नही
किसी दीवार के पीछे
मैं धुआँ नही, आग हूँ
जलूगी जलाऊगी
मैं डरती नही,
पीर स
पगम्बर से
अवतार म
जह न्नुम म जाय तुम्हारी ज न्नत,
ज नत मरे पास है
ज न्नत मेरे सीन मे है
मरे होठो म है
मरी आखा मे है
पर मानती नही
वह हि दुस्तानी ब न्द गोभी ।
भाड म जाय
मेरी बला से
मुझे क्या लेना है
जब तुम मेरे पास हो ।
शराब ला,
उडेल द बोतल,
उडेल दे तरे होठो से
तेरी निगाहा से
बना दे कॉक्टेल ।
ह्विस्की है जाम म
ह्विस्की है बोतल म
तेर श्वासो म ह्विस्की
माहोल म ह्विस्की
तेरे होठा म ह्विस्की

ले ली अगर चुस्की
तो चलती रही हिचकी,
जा रहा है होश
सो रहा है हवास
जाग रही है हविश,
ऐसी हविश जो मिटती नही
बढती ही जाती है
घटती नही।
अब तो
उफान है तूफान है
टीस है चीस है चीख है
भूख है हूक है
मास म।
जाग उठी है
ये मासल इच्छाएँ
फडक उठी है
ये मास पेशिया
तन रहा है मास
खिच रहा है मास
कडक रहा है मास
फडक रहा है मास
अकड रहा है मास
बढ रहा है मास
उछल रहा है मास
आकुल है मास
व्याकुल है मास
रम जाय मास म मास
छा जाये, मास पर मास।
आहार है मास का
व्यवहार है मास का
व्यापार है मास का
इधर मास उधर मास
प्लेट म, फ्लैट मे
कुर्सी पर, सोफे पर,

दिल म, कुछ नही
दिमाग म कुछ नही,
दिल रह गया एक मांस का टुकडा
जो धडक रहा है
दिमाग रह गया एक मांस पिण्ड
अब तू एक पिण्ड,
जब मै एक पिण्ड
बीच म न रहे कोई दीवार
मलाबिस की न मलमल की
दखनी है मुझ तरी वादियें
मापना है गहराइया
तरी सलवटो की
तरी करवटो की।
दर न कर
सब्र है न गऊर
बनाइमकम है इन्तहा है
मरे इतजार का।
पर्दा हटा
पर्दा गिरा
ज्ञान पर
विज्ञान पर
ध्यान पर
भगवान पर
ईमान पर
दुनिया मिट गई, सिमिट गई
समा गई, महदूद है
इस कमर तक
बच है जिसम दो इन्सान
तू और मैं
हौवा और आदम
आ मरे पास मे आ
मरे पास म आ
तरी नीला आखो म इतराता है
एक नया आलम

औवज की रात

दिखाई पडती है तस्वीरें
तरी और तरी दुनिया की
तरी आँखा म नज़र आत है
कबरे गज़ीना
इनज़, टवनज़
करा क अकरा के
वरन के हम्बग के।
यह वार रम ये बोतला की कतार
य स्टज ये स्क्रीन
जहा नाच रही है तू
जहा गा रही है तू
नाग रही है तू
अर तरी आखा म देख रहा हूँ
एक फिल्मी शो
जा रही है तस्वीर
जा रही है तस्वीर
एक क बाद एक
एक मीक्वन्स म।
यह तस्वीर किमी शख क साथ
यह तस्वीर किसी सय्यद क साथ
मैं दख रहा हू
कोई शख है
काई सय्यद है
काई पीर है
कोई सफीर है
काई मीर है
काई अमीर है
तू लगती है एमी कि
तू कीलर है
तू फीलर है
तू लीज़ी है
तू गार्बो है।
तरी आखा म
कबरे की दुनियाँ

नाइट की दुनिया
शराब की दुनिया
कबाब की दुनिया
पिलाती है शराब
पीनी है शराब
चलती है ड्रामा
जिसकी थीम एक
रात एक एकदम एक
मगर बदलता है एक्टर
बदलता है पाटनर
बदलता है मिजुगाना
बदलता है गाना
वह गया आ रहा है नया सीन
पता नही स्टज है कि स्क्रीन
वह रहा हसीन
जसे कि हो हिन्दुस्तानी दुलहिन
लिपटी हुई सिमटी हुइ
नाच रही है नाच रही है
जमी हुई है दशकों की आँखें
जसे कि कोई लाटरी खुलने वाली है ।
वह गया बटन
वह गया ज़िप
स्लिप
शीथ
स्कर्ट
ब्रा
अन्डी
पेन्टी
मगर फिर भी रह गया पेन्टी
जो कि टा सपेरेण्ट है
यह माजरा क्या है ?
बन्द करो यह सीन
बन्द करो आँखें
मुझे द्रौपदी याद आ रही है
नौबज़ की रात

जर
सिगरट ने पकिट
शराब की बातलें
प्लटों म पड थ टोस्ट मछली क।
वह कौन थी ?
क्या थी ?
गूज रही थी आवाजें
रह रह कर।
वह एक मादा थी
पाँच फीट छ इंच लम्बा दअरफूट
ततीस इंच सीना
बाइस इंच कम्ट लाइन
बारह इंच पिण्डलियाँ
एक सौ दस पोण्ड वज़न
खाली पट
वह मादा थी।
औरत क्या है ?
ख्वाब।
रागनी।
आइडिया
दिमाग़ का।
दिमाग मरता नही
आइडिया मरता नही
शायद औरत मरती नही।
गूज रही थी आवाज।
उठा।
बाहर निकला किसी तरह
टक्सी-टक्सी।
होटल समीरामीस।
टक्सी जा रही थी
उन्हा राहा स
मगर
बदला हुई थी सडकें
बदल हुए थ नज़ारे
बदला हुआ था बगदाद,
या बदला हुआ था मैं।

गुठली का आम

यह लो आम।

आपके लिए।

मगर यह गुठली है।

आम कहा ?

गुठली म आम है।

रोप दो,

इन्तजार करो

उस दिन का।

मतलब ?

मतलब साफ है

सब्र का फल मीठा हाता है।

गुटुरगू

सुनो
जरा कान लगाकर सुनो
यहाँ गूँजता है गुटुरगूँ आज भी
खंभों में
इन खाली कमरों में
उन कबूतरों की
जिनके पंखों पर होती थी
कलाबूती पचरंगी
चोंचों पर लिखे जाते थे
गीत

नरत मिलन के
और कुछ कसम भी थी कि
प्यार करेंगे
मगर पार न करेंगे
लक्ष्मण रेखा।
पर ये रसमी कसम
इतिहास की दुहाइयाँ
जमकर बर्फ हो गई
जब बर्फ का रंग लाल हो गया,
जैतून की पत्तियाँ बिखर गई
और
वह
एक रोज़ मर गया।
क्यों ?
पता नहीं।

जौबज़ की रात

कोई कहता है दिल दहसत खा गया था
कोई कहता है भूत आ गया था
कोई कहता है पीला बुखार आ गया था
कोई कहता है शाहजहाँ के बेटा ने
बगावत कर दी।
जो कुछ भी हो,
वह मर गया
दहसत से
दिल के दौरे से
और ये उसके बचे हुए कबूतर
लकवा खाये हुए,
पर कलम
अब भी कह रहे है कुछ गुटुरगूं में
गुटुरगूं गुटुरगूं गुटुरगूं।
मगर कौन समझे इनकी गुटुरगूं ?
मैंने तो देखा है
बिल्ली जब आती है
तो आँख बन्द कर लेते है,
फिर वही
गुटुरगूं गुटुरगूं गुटुरगूं।

कघा

ओ कघे अय कोम
घूमे हो मेरे सिर की गलियो म
न जाने कितनी बार
गुजरे हो हर कूचे से हजारा ही बार
तुम जानते हो इनकी रगत
तुम जानत हो इनकी रग रग
वाकिफ हो इनके कट स
वाकिफ हो इनके बण्ट स ।
मर बाल क्या है
जसे कि हा किसी कालेज के छोकरे,
आया जो कोई झोका,
हो गये खडे
छा गया हुडदग
बिगड गया डिसीप्लिन,
कोई खडा, कोई पडा
कोई टेढा, कोई लेटा ।
बाल स बाल अड जाता है
बाल से बाल लड जाता है
उलझ पडता है बाल से बाल
खिचने लगती है बाल की खाल
होने लगती है गुथम्-गुथ, जुद्धम जुद्ध ।
यह मजमा
यह हगामा
मरी खोपडी बन जाती है
हिदुस्तान की ससद ।

पर कल जो देखा
इनका ढंग
मैं रह गया दंग
खोपडी की सतह पर
दिखाई पडी हिन्दुस्तान की सियासत
बालों का तो हाल ही बदल गया
जैसे कि सारा नक्शा ही बदल गया हो।
नज़र आईं नई पार्टियां
लगा लिये हों लेबल नये
कर लिया जैसे कि फ्लोर क्रास
निखर आई नई राजनीति
टूट गया एक पार्टी तन्त्र
सर पर छा गई मिली-जुली सरकार
यह सब मैंने सोचा।
पर प्यारे क्या करते रहे तुम
कभी बताया तो होता
किसने शुरू किया फ्लोर क्रोसिंग ?
किसने खडा किया बगावत का झण्डा ?
तुम्हें अपना फर्ज तो निभाना था
खतरे पर सायरन तो बजाना था।

टेलीफोन

हाँ सुनिये तो,
सुन रहे हो ?

तो ठीक है
गर फसला है कि
फासला न रहे।
तो फिर क्या ?
ढूढ लो एक बहाना
हसीन सा
और ज़रूरत समझो तो
पूछ लो
किसी एक्सपट से, नेता से,
अभिनेता से विधिवेत्ता से
कि कसा बहाना
फब जायेगा
फिट हो जायेगा
कथानक म।
आदश वादश साँप की केंचुली
फक दो लबादा बेवक्त का
आओ तलाश करें बहाना
मिला जुला
पारस्परिक सहयोग से सभूत
किसी सुन्दर सपने का
ब्लू प्रिण्ट

जल्दी करो
एक छलाग म बदलती है दुनियाँ
बनती हैं नई रेखाएँ
सिमटती है सीमाएँ
घटता है फासला,
जरा महको।
तेरी सासो की महक से
महकते ये तार
य सितारे
हा

ह ?

रांग नम्बर ?
सच ?
रियअली ?
सोरी !
माइ गुडनिस !
स्पेस एज की तो यही मुसीबत
जरा सी गलती
ले जाती है किसी और ही कक्ष मे
टकरा देती है किसी नये ग्रह से।

नीलकठ द्वितीय

मेरा परिचय मत पूछ,
मैं नीलकठ द्वितीय
मेरे नाम वसीयत है
नीलकठ प्रथम की
उत्तराधिकार म मिला
काल कूट
युग युग का
समुद्र मथन से आज तक का ।
वसीयत क साथ
नसीहत भी है कि
पिये जा
हलाहल
युग का
जग का
क सनट्रेटिड काफी समझ कर
और
म
आदेश से
आवेश म
पी गया
एक घूट म
उडेल लिया विष कुम्भ
कण्ठ स्थल म ।
विषधरो की फुकार
मरी सांसा म

स्वरा मे
मैं अब 'आउट आव बाउण्ड्स'
मेरी परिधि से पार हो
मेरा कहना मान।
दूर हट,
क्या बनती हो कृष्णा ?
मेरी सासा की गर्मी ने
पिघलत रेखा है
हिम भी और हम भी
तुम्हे कैसे समझाऊँ ?
दक्ष कभी दरियादिल नही हुआ
सती सस्करण सभव नही
अपर्णा की भूमिका आसा नही
द्वि जिह्वा दुनियां म
द्विज मा जमता नही
सच मान
क्या रक्खा ह ?
तिक्तता म
रिक्तता म
देर न कर
भाग जा
मधुमास कही और है।

त्रिशंकु की परम्परा

मैं आज हू
कल का बेटा
इतिहास का धनी
त्रिशकु का वशधर
अतरिक्ष का पहला मानव
जो उड गया पचतत्व के कपसूल म
पचशील के सूट म
जब लगा एक धक्का
विश्वामित्र के लाचिंग पड से
पहुच गया अतरिक्ष म
धकेलने लगी धरती
दुतकारने लगी जन्नत
इसी धक्कम पल म
शीत युद्ध म
दो ताकतो के झगडे म
चपेट म
लपेट म
लटक गया अधर म
निरावलम्ब
शून्य म शीर्षासन किये हुए
घूमता हुआ
पेण्डुलुम सा
कभी दाये
कभी बाये
तरक रिस्ता

जहा स
ज-नत स
यह है मेरा एतिहामिक परिवेश
मैं आज हूँ कल का बेटा
त्रिशकु का वशधर !

रेत से रेत मे

जी तो करता है कि
तेरी बाँहा क घरे म
तरी जुल्फा के झुरमुट म
कुज म
निकुज म
सघन छाहो म
बठकर
दखता रहू
य चश्म
ये प्यार क चश्म
य जमत घट
य गागर म मागर
ये तेरी सामा से महकी
सुगधित हवायें
य ठण्डी जाहे
इस नखलिस्तान की
जिन्दगी क मरुस्थल म
जि दगी भर,
और
शायद
ये फटे हुए होठ
य सिल हुए होठ
य झुलस हुए हाठ
य अलसाय हुए होठ
य पथरील होठ

औबज की रात

सज जाय
खुल जायें
खिल जाय
महक जाये
तर जायें
अहिल्या की तरह
तेरे अधरो के
पदयाम स
पर
रुक नही सकता
मैं राहगीर हूँ
इस सहारा का
इस रेगिस्तान का
इस रेत का
जो रखती नही निशान

काल का

कल का

इतिहास का

पदचिह्नों का

मेरे वादे है इस भू से
मेरे वादे है इस लू से
मेरा हिसाब है

इस भू से

इस लू से

पुराने अहसान

बचपन के

जब लू ने मुझे लोरी दी थी
उस रेत के पहाड पर
उस बालू के महल मे,

महल ढह गया

पहाड ढह गया

रेत के तूफान म

रेत का तूफान मुझे पुकार रहा है,
मेरी जेब म लू का वारण्ट

रुकन की इजाजत नही
मिलन का इजाजत नही
तेरी बात,
बौरा देती है मुझे
भुला देती है मुझे
उस बालक की तरह
जो भूल जाता है गिनती
गर टोक दिया किसीने,
सा मरी महरबान
रोक न मुझे
टाक न मुझ
पकड न मुझ
जकड न मुझे
मैं डरता नही
लू से
जाग स
तूफान से
पहाड से
खला हू
खिला हू
इस लू म
इस आग म
इस रेत के तूफान म
पला हू
पनपा हू
रेत स
रेत म
इस रत क पहाड पर,
मगर डरता हू
यह रेत का बादल
बरस न पडे
तर गुलिस्ता पर
ढक न द
तर नखलिस्तान को
औवज की रात

और यह
जन्म जन्म की प्यासी लू
सोख न ले
अमृत
तेरे होठा से
यह दस्तूर है
इस लू का
इस भू का
मुझे जाने द
तरी महरबानिया की शुक्रिया
कल सुबह का
इन्तजार कर।

मिनी कङ्काल

रलव प्लेट फाम
ट्रक पर।
कोई
जिसके चेहरे पर चिह्नित
बीस पतझड।
जिसकी गोद मे पल रहा
डेढ साल बूढा
मिनी ककाल।
चूस रहा हो जसे कोई
दूसरा ककाल।
पास म बठा हुआ
उसका साझीदार
भागीदार
भगा रहा मक्खियाँ
जो पल रही थी।
उन मासूम ककाल पर।

हेमरिज

अर, तुम
भगवान से डरत हो ?
लगता है
बुद्ध हो, बेवकूफ हो
भगवान तो
कभी का भाग गया
या कद हो गया
अपने ही महल म ।
हो सकता है ब्रेन हेमरिज हा गया हो ।
पर फिर भी, अच्छा है कि
राज पर पर्दादारी रहे
इसलिये कि
बग़ावत न हो जाय
उसके ही अनुयायिया मे,
रौला न पड जाय
लीडरशिप का,
जाग न जाय
कोई नया खलीफा,
बनी रह यह मिथ
और इसीलिए
मिथ्या प्रचार चालू है
बडे जोर शोर से ।
भगवान
सब कुछ दखता है,
सुनता भी है

दर अवर समझना भी है।
पर बस तो क्या कहिय
हमारा भगवान ता भोला है—
बम भोला
मस्ती म रहता है
मस्ती म छानता है।
कर लो माँग
दे देगा भाँग
और वरदान भी
बन जा ज़िप्पी बन जा हिप्पी
पिये जा चरस चरस म नवरस
सबसे ऊँची भग, भग म नवरग
इस भाँग खाये हुए भगवान की दुनियाँ म
करते रहो टनाटन घनाघन
बजाओ घण्टे, हिलाओ टालियाँ
मदिरो म
घण्टाघरा म।
चीखो खूब चीखो, भापू बजाओ
पर क्या भाँग खाया हुआ भगवान
जाग जायगा ?
अगर जरा-सी करवट बदल भी ली,
आँख खोल भी ली
तो उसस क्या ?
यह पुजारी गजब का गोला
रखता है स्लीपिंग पिल्स का स्टोक
गिरा देगा कोई टूनोल या ल्यूमीनोल
और छुट्टी हुई
ब्रह्मा के एक दिन की।"
लो आज की ताज़ा खबर
मडिकल बुलेटिन
भगवान का बहरापन कम्पलीट,
लाइलाज
उसे अब कुछ नहीं सुनता।
मरा विश्वास करो

औबज़ की रात

भगवान् से क्या डरना ?
बात करो तबियत से
हमारी गुफ्तगू वह न सुन सकेगा।
तुम बुरा न मानो तो
यह किया जाता क्लोज़
भगवान का,
शास्त्र-शास्त्र भिजवा दिये जायें
किसी आर्काइव्ज़ में
काम आयेंगे
शायद
साइंस अनुशीलन में।
फुरसत में देखेंगे कि
मनु याज्ञवल्क्य में क्या कुछ कॉम्प्लेक्सेज थे ?
उनकी भी कुछ कुण्ठायें होंगी जरूर
वक्त में दमन या कामना का दौर न रहा होगा ?
रामायन की जब व्यवस्था में भी
जब घी दूध की नदियाँ बहती होंगी
तो तत्कालीन पतिव्रता रूपवती
और आज की 'रूपवती' की आदतों में
क्या फ़र्क रहा होगा ?
चलो, छोड़ें इन सब बातों को।
हो जायें कुछ काम की बातें
मुझे जवाब दो
सच सच
तुम्हें भगवान की कसम
मुझे सताता है
तुम्हारी आँखों में निमग्न है
यह सिन्दूर का रंग!
कोई पहचान रंग था नहीं,
हटने दो रंग
ये कैसा नई माला नया दायरा
लिए नये सिन्दूर में।
सिन्दूर की डिबिया
मगर अब न।
भगवान को क्या डर ?

आहुति

रामा, मरी श्यामा
कामधेनु की नदिनी,
पयस्विनी,
आखिर चल दी
तपस्विनी-सी
निर्मोही सी
छोड कर
चमडी की चद्दर म
ढाँचा
जो ढिचराता रहा
कुछ रोज़
कोरी आश की घास पर
जब चारा न रहा
जब सूख गये
पयकूप
दूध क झरने
हड्डियो की मज्जा
धरती
जलकूप
जब आश न रही
गोपाल से
गो भक्ता से
जब हिल गया
विश्वास कि
अब न आयेगा

बांट दे यज्ञावशिष्ट
इन नव पुरोहिता को
गिद्धा को
चीला को
चूहा को
कुत्ता को
शृगाला को।
हवन कुण्ड म
झाक दे समिधा
अस्थिया की

रामा स्वाहा
श्यामा स्वाहा
पयस्विनी स्वाहा
गोरस स्वाहा
ह्री हो, हा हा।
अष्टावक्र स्वाहा।
गांव स्वाहा।
स्मति स्वरूप
यह रीती हाण्डी ये भाडे,
ये बतन ये रस्सियाँ
काम आयेंगे
पूर्णाहुति म
शायद
अभी देर है
पूर्णाहुति म।

क्या यह सम्भव नही कि
तू आ जाये एक बार
या भेज दे कोई नया मसीहा।
मैं तो तंग आ गया हूँ
इन नये मुल्लाओं से,
इन वज्र मूर्खों से
जो घेरा डाले पड़े हैं
मेरे आस पास।
मेरी मानो तो
रिलीज़ कर दो नया महात्मा,
बड़ी माँग है
बाज़ार में।
इस वक्त
बोक्स ओफिस हिट होगा।

"यह कि वह"

कहिए, कुछ कहिए तो
आप तो खड़ी हैं,
चुपचाप,
गुमसुम,
छाया सी,
माया सी,
कौन हैं आप ?
क्या आना हुआ ?
इस वक्त, बेवक्त,
ज़रा ज़ोर से कहिए,
मैं सुन रहा हूं,
समझ रहा हूं,
तो, आप !
याद है कुछ याद
बनकर आई हैं कुछ फरियादें
शकुन्तला की तरह
दुष्यन्त के दरबार में
आप आ खड़ी हैं

शौकीन था
शिकारी था
मारता था हिरणा को
पकडता था हिरणिया को
उसका रनिवास एक बाडा था
एक कबाडा था
पकड लिया जिस पर नज़र टिक गई
फिसल गया जहाँ पर नज़र फिसल गई
शकुन्तला प्रियवदा रुक्मणि
मोडल थे
सीजन के
साल के
उस ज़माने क
मोडल बदलते है
बदले जाते है
कार के, ब्यूटी के,
कृष्ण के बाडे म सोलह हज़ार मोडल
हाग जिनके ग्रेड कई
कटेगरी कई
कोई चालू तो काई आउट आफ डेट
सडती होगी सत्यभामा
रोती होगी रुक्मणि
और भी हागे कटपीस के माल
जिनका न मिलता कोई नामोनिशान
कवल गिनती म आते थे काम
इकाइयो म, दहाइया मे, सकडा म,
हज़ारा म
लगाये हुए लेवल
एक फक्टरी का एक बाडे का
जिनका नाम था रनिवास
भनभनाती थी जहा
महारानिया रानिया पटरानिया
दासियां दरोगिया गोलिया
सडता था जावन, उफनता था यौवन

तुम वस्तु हो, वस्तुस्थिति हो
व्यक्ति हो, अभिव्यक्ति हो,
भावो की, अनुभवो की,
तुम हास हो, परिहास हो
आश का, विश्वास का
तुम आकार हो, साकार हो।
माया की, छाया की,
तुम रचना हो, वचना हो
साधना हो, आराधना हो,
तुम रक्षा हो, लक्षा हो,
प्रकृति की, प्रवति की,
हाँ, मुझे याद आ रहा है
मेरे तुमसे कुछ वादे भी थे,
मेरे कुछ इरादे भी थे,
कि भाग चलू तुम्हे लेकर,
पृथ्वीराज की तरह
अर्जुन की तरह
तुम बन जाओ सयुक्ता
तुम बन जाओ चित्रा
पहुच जाऊँ एसी जगह,
जहा और कोई पहुँच न पाये,
ढूढते फिरे फरिश्ते
कयामत के रोज़
जब मिलन नही पाये टोटल,
सर मारता रहे चित्रगुप्त
उस बनिये की तरह
मिली न हो जिसकी रोकड
पर क्या करूँ
मजबूर हूँ
बेबस हूँ
जकडा हूँ
कैदी हूँ
हिल नही सकता
डुल नही सकता

देखती हो, वह सो रहा
मनहूस
भूत की तरह
सी० आई० डी० की तरह
छाया रहता है सिर पर
डांटता है, फटकारता है
कर दिया जीना हराम
जरा, धीरे बोलो
सोया है, अभी तो, अंधेरे में
जगने वाला है
जग गया तो
ढा देगा गजब,
तेरे पर, मेरे पर,
कौन है यह,
जानती नहीं, कौन है ?
सुपर इगो
मेरी जान का दुश्मन नम्बर एक
अब जाओ, जल्दी करो,
वह करवट बदल रहा है,
फिर आना, इसी तरह
अंधेरे में, स्याह रातों में
अच्छा तो
टा टा बाइ बाइ
पारट स्क्रिप्ट
टन टन घड़ी ने बजाए
एक दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात,
मेरी आँखें, मेरे हाथ,
रेडियो और दिया
दाढ़ी ना बनाती है
पाव ना पनी है
गुस्सा ना करना है
[illegible] ना करना है
पर [illegible] बना रहा
[illegible] बचा हो

रेडियो बोल रहा था
आज के बाजार भाव
तेल के, नमक के, लकडी के
सच क्या है झूठ क्या है
वह कि यह
जाग रहा हूँ कि सो रहा हूँ
मरी दुनियाँ कौन-सी है
यह कि वह।

डरो मत अपनी शक्ल से,
डरने को और बहुत हैं।
हिंदुस्तान का बचपन भाग गया
जवानी भाग गई, अकल भाग गई,
शक्ल भाग गई
सबके सब तुम्हारे ही डर से।
जमाये रक्खो अपनी दूकान
यह स्वाग, यह ढाग
बस चलता रह यह क्रम
विलायती बीज से,
आर्टिफिशल इनसेमीनेशन से।
वसे, मैं तुम्हारा राज़दाँ
काबिले एतबार।
भरोसा करो मेरी बात का,
तुम अकेले नही हो, तुम्ह मालूम रह
तुम्हारा परिवार किसी एक लखनऊ तक
सीमित नही है,
छा गया है सारे हिंदुस्तान मे।
ये नये
नवाब जादे, साहिब जादे
पाँचालियो के बेटे, पचा के बेटे
साँझे के बेटे,
कोई पी० एल० के बेटे,
सी० एल० के बेटे,
चार सौ अस्सी के बेटे,
चार सौ बीस के बेटे
कोई सतमासिये, कोई अठमासिय,
हिलते डुलते भ्रूण के बच्चे
य नय नवाब ज़ादे
वाजिद अली की कब्र का मुह खुल गया
बाज़ारू बेगम दाखिल हो गइ हरम म
एक बार फिर से,
मगर फिर भी,
मुझसे खौफ़ का कारण नही

माना कि
मेरे पास उस्तरा ज़रूर है जो
तेज है
सक्षम है
हटाने को नाखून पुराने
बाल लोग कहते भी हैं
मैं जर्राह हूँ, हकीम हूँ, हज्जाम हूँ
पर मुझसे खौफ बेखबर
जब तक मैं ज़िंदा हूँ
सलामत है आपकी नाक
इस देश में [illegible]रम का दाखिल मुमकिन नहीं।
पर यह कभी न भूलिये
मैं आपका हज्जाम नाई,
युग युग से चला आ रहा हज्जाम नाई।
लाइए मेरा इनाम
बढ़ा हुआ 'डी० ए०'।
आप जानते हैं
महँगाई है।

चार्ज शीट

एक दूरी से
शीशे म शक्ल
वहुत अच्छी लगती है
मुझसे अच्छी मेरी परछाइ
पर ज्याही
दूरी हटी
मुकाविला हुआ आमने-सामन,
ता चेहरे के गडढे जो पुते पडे थे अवतक,
प्लास्टिक सजरी के कमाफ्लाज से,
एकदम उघड गय
मेरे पुराने राज जिन्हे एम्मवोण्डर समझे वठा था
छुपे पडे थे इन खडडो मे,
और सबके सव यकायक मुखबिर बनकर
उवेडने लग पुरानी दास्तानो के तार
जो ढके पडे थे
किसीके मक्सफक्टर के प्लास्टर के नीचे।
जब वेपदगी गुजरने लगी बर्दाश्त के बाहर
तो सोई हुई दास्तानें बगावत कर वठी
और एक फौजी कू हो गया।
मेरे आज के ये दुश्मन
कल जो दोस्ती का दम भरते थे
हास्टाइल गवाह बनकर
नगा करन लगे मरे कल का
मुझे भरोसा न रहा मुझ पर ही
अपनी शक्ल पराई लगती है।

कृपया शीशा हटाओ,
मुझे शीशा न दिखाओ।
मुझे डर लगने लगा है
अपने ही इतिहास से।
अपने ही भूत से
मैं इतिहास का इन्कार करता हूँ,
मेरा कोई इतिहास नहीं,
मुझे भूगोल में मत बाँधो
मेरे लिए न कोई रेखा है, न सीमा है
किसी कटिबन्ध की, न किसी काल की,
मेरे लिए
न कोई ध्रुव सत्य, न ध्रुव तारा।
हटाओ यह कुतुबनुमा
मुझे कोई दिशा भ्रम नहीं
मेरे पर लांछन है तो एक ही कि
मैं एकाकी हूँ,
        अजनबी हूँ
और
मैं
स्वीकार करता हूँ
इस जुर्म को।

तोहफा

'सर !'

"यस सर, जी श्रीमन।"

"सुनिये तो।'

"कहिय ता।'

"एक बात है।"

"दो बात।"

"जमाना क्या चाहता है ?"

"पूछिये जमान से।

"इस तरह नही।"

"ता फिर किस तरह ?"

' लोग चाहते है 'जी हुजूरी, अकल की पूछ नही।"

"ठीक ही तो है, जी हुजूरी सब्स्टीच्यूट है अक्ल का।

पर लोग अक्ल-अनेमिक है।"

"हा, पर बताइय कोई हल, कोई फोरमुला।"

'अक्ल के इजक्शन ले लो।"

"मगर रिएक्ट करत हैं पनसिलन की तरह।"

"तो बताये देता हूँ एक फोरमुला, एक नुस्खा,

मगर पटेन्ट मेरा है।

तुम एक काम करो।"

'क्या ?'

"पकड लो, पकडवा लो, खरीद लो

कुछ तोत

और तोतो को रटा दो—

जी हाँ, हाँ जी, यस सर, यस प्लीज।

और तोता, जो रटता आया

एक आवाज़, एक ही आवाज़
जो ताइद करे
आपकी हर हरकत को
'राइट या राग',
पर्दा डाले
आपके उल्लूपन पर,
        बेअक्ली पर,
        बेवकूफी पर,
दिमागी दिवालियापन पर,
और आपके हर सवाल पर
तयार रक्खे
एक 'स्टोक आन्सर
एक ही जवाब,
जी हाँ, हा जी,
क्या फर्क पडता है ?
आवाज़ आदमी की हो !"
या
पक्षी की।

यह नुमाइश
मेरी उपलब्धियों के ये मडल
य कलर
ये फीते
और ये सनदें
मेरे बहादुराना आमाल की,
कमाल की।
वणमाला के प्राय अक्षर
टटू हो गए है
मेरी कलाई पर।
बढ गई है लम्बाई मेरे नाम की
मगर
इस मलाबिस के मलबे के नीचे
ढक गई है
रॉक आव एजिज
जिस पर बठता था
मैं
अपने पूरे 'मैं' पन के साथ।
न कोई बोझ था,
न कोई सर दद।
नाक सलामत थी।
पूण स्वत त्रता थी
सूघने की,
सोने की
रोने की,
जीने की,
मरने की।
पर ऐसा तो न था कि
कसमसाहट के साथ
किसी के जूतो म खडा रहूँ।
जूते चुभते हो तो
चुभते रह ?
चुभन को चुपचाप
सहता रहूँ

मगर जीभ से ताला न हटे।
प्यास लगे तो लगती रहे
और इस आई-ड्रोपर से
रागन के पानी की दो बूंदों से
जबां को तरसाता रहूँ।
भूख जागे तो
इस पान की डिबिया में
बरगलाता रहूँ
यह पान ही पान,
गंधहीन, रूपहीन
पान की चक्की, पान का चूल्हा
पान ही खाना, पान ही पीना
मैं 'मोडाज' तो नहीं
मैं टटरस तो नहीं
ये पान के इक्कलान
बटा रहा हूँ भूख
पुलपिटों में
पोडियमों में
मंचों में
मुखों में
और आज
अब भूख की [illegible] और ही बदल गई
मस्तिष्क में झिर्रियाँ उभर आईं
इस हद तक कि

मैं चाहता हूँ
लट जाऊँ।
मगर कोई लिटा दे,
टोपा हटा दे,
जूते खोल दे,
पटी हटा दे।
वह देखो गोरैया
कर रही है रेत-स्नान
इस रेत गंगा में
मैं भी पा लूँ मेरा
खोया हुआ मैं पन
इस रेत में
उस टिमटिमाती रोशनी की चकाचौंध में।
अंधेरा रहता है
मुझे उस रोशनी में क्या लेना है
जो अंधा बना देती है
उस भीड़ में कौन मिलेगा
सिवाय बहरापन के ?
मेरे पर अहसान होगा
मुझे नंगा कर दो
मेरे जीवन काल में
समझ लो मैं जिंदा बुत हूँ
स्टेच्यू हूँ
मेरा अनावरण आज ही कर दो
मरने के बाद तो नंगे किये जाते हैं
समारोहों में
फिर कल का काम
आज ही हो जाये
क्या दिक्कत है ?
खुली हवा को टकराने दो
मेरे कानों के पर्दों से
संगीत पैदा होगा।
यह टोपा
बहुत ढोता रहा हूँ

जो तुम्हारे ही लिये है।
इस मास पी० टी० म उठे हुए हाथा म
कोई इशारा नजर आता है
जो तुम्हारे ही लिए है।
ये आकाशवाणी कि
तेरा इन्तजार है'
सचमुच म सही है,
तो जाओ
और ले जाओ मेरी तरफ से
सब कुछ
जो मिलता है मुझे
विरासत म
इतिहास से
और समस्त उपलब्धिया के दस्तावेज
मुझे आवश्यकता नही
आज के बाद
इस टीले पर
धूल खाऊँगा और जिंदा रहूँगा

बपतिस्मा

हाँ, तो
आपका नाम है
अब्दुल्ला
यानी
अल्लाह का आबिद
          ग़ालिब
          गुलाम
वाह रे नामदार!
तुम्हारे अब्बा का नाम?
अलाउद्दीन
अम्मी जान?
हमारा
और बिरादरों में
गुलाम हुसैन
आबिद हुसैन
गुलाम क़ादिर
गुलाम नादिर

वसरा के वाजारा की
जहाँ बिकते थे गुलाम
मवेशिया की तरह,
ईसप की नीलामी होती थी
खरीदन का मापदण्ड ?
यह था कि
पुटठे कसे है ?
कितनी मछलियाँ पल सकती है
इन गुलामा की वाटिया मे
और
इन मछलिग्रा स पलत थे
शहनशाह
चलती थी सल्तनते
सुलतानो की,
वजारते
वज़ीरा की
निजारत
ताजिरा की,
ईसप के भाई बन्धु
ढात रह पहाड के पहाड
पिरेमिड
मिश्र के अल अहराम
रोम की सभ्यता व साम्राज्य की नीवें
सब की सब
शोणित स्नात
खर, चला, अब्दुल्ला जी
यह कौन है ?
हो जाय तारुफ इनका भी,
ये भगवान दास जी,
मारूफ है
य भगवान के दास
सवक
किंकर
चरणरज

पर बदली नही
किस्मत की लकीरें
न जाने कौन सी स्याही मे
लिखा था कातिबे वक्त ने
चित्रगुप्त ने
एक गुलाम एक दास
यह किसी इनायत का बेटा
वह किसी दया का बेटा
फर्क कहा है ?
जरूर कोई साजिश रही होगी
आखिर कब तक
पहने रहोगे
यह नकली खाल ?
कब तक गाते रहोगे ?
ये गीत
किसी के फज़लो करम के
आशीर्वादों के,
अपनी हस्ती मिटा कर
दास भाव से
दस्यु बन
पीढी दर पीढी
जीते रहोगे कब तक ?
किसी की रहमत पर
इनायत पर
दया पर
बख्शीश पर
प्रसाद पर
घूमते रहो बने हुए
अल्लाबक्स खुदाबक्स
रामबक्स, गुरुबक्स
राम प्रसाद, हनुमान प्रसाद
जैसे कि अपने मे कुछ है ही नही
मैं कहता हूँ,
फेंक दो लबादा

कह दो
मैं
अब मैं हूं,
किसी का दास नहीं
मैं मन्सूर
मैं अनहल हक़
मैं भगवान
मैं अब न आबिद हूँ
न दास
गर कुफ़ है तो क़बूल है
मैं काफ़िर सही
फ़िक्र नहीं फ़तवे का
यह फ़तवा सबल
यह फ़तवा साल
और आज मैं
मैं मुक्त इन्सान हूँ

गली मे गलियारा

मेरा टीपू
अलसैसन वश उजागर
कुलीनता म कोई क्सर नही,
किधर म ही देख लो
मात पक्ष
पित पक्ष
नाना नानी
दादा दादी
लक्कड दाद तक
रक्त का कतरा कतरा
शुद्ध रक्त का सर्टिफिकेट दे सकता है।
इसकी मा
गजब की कुतिया
सबके मन भायी हुई
हर शो की हीराइन
लगातार कई साल तक,
बाप
नाम का टाइगर
नवाब साहब का खास पिट्ठू
पुलिस का कुत्ता
डॉग स्क्वड का लीडर
जिसे अपनी नाक पर भरोसा
जिसे अपनी पूछ पर नाज,
मुझे टीपू पर नाज
टीपू को मुझ पर नाज

कोई शनि की साढ सती थी
या कोई ग्रह वक्री हो गया था
मैं टीपू के साथ
वडे सवरे
जा रहा था घूमने कि
सामने मिल गया
भूरिया
भूरे रंग का कुत्ता
नामकरण भी किसी पंडित ने
नहीं किया था
सड़क छाप नाम
जिसके शरीर पर
अस्सी घावों से ज्यादा के
निशान
गली का राजा
गुण्डा
कुछ भी समझ लो
झपट पड़ा टीपू पर
धर दबाया टीपू को
फिर आ गया
काळिया
धोळिया
बीसिया
मोतिया
सब के सब
भूरिये के रिश्ते में
कोई बेटा
कोई पोता
कोई नाती
वसे,
एसे लोगों की वंशावलियाँ नहीं होती,
न किसी प्रकार का रेकार्ड
न कोई वही भाट
टीपू के मुकाबिले में

टीपू गया
गया ऽऽऽ
अब लौट कर न आयेगा
मुझे आखिर,
इस गली म रहना है
गली म गलियारा तो सभव नहीं।

दिवास्वप्न की सच्चाई

होता रहे अभिषेक
हर साल
नवीनीकरण के साथ
मनते रहे जश्न,
दशरथ का नया दस्तूर
आगे राम की मर्जी
रूठे तो
रूठा करे
भागना चाहे, भाग सकता है
जाना चाहे, जा सकता है
मगर दशरथ के जीते जी
राम का राज्य
एक सपना है
सिंहासन से बडा राम नही।

बहकन जात है
रुकते जात ह
बेसुरी राग मे
बढ बढ कर
हर दिशा म
हर कोने मे
भीड को किनारा नही
कोई मोड नही दिखाई दता
न बाय
न दाये
कहा जाय ?
गर लौट भी जायें ता,
कहाँ जायें ?
क्या रक्खा है
अ धेरी गुफाओ म
काल कोठरियो मे ?
काली भीता पर
मौजूद है
यथावत आज भी
मकडिया के जाले
और आग
रास्ता रुका हुआ,
खम्ब ही खम्ब
बागी पर,
विश्वासहीन भीड
खडी है
बहकी सी
सहमी सी
कोलाहल म ।
कोलाहल बढता ही जाता है
इधर आओ
इस तरफ आओ
चल आओ
बमटके

घेराव

मैं [illegible] आ गया हूँ
तुम और किस तरह?
यह सुनकर
अंदर से एक आवाज़ आई
तो
चल पड़ा
चुपचाप
और साथ में
मेरा हमज़ात भी
मगर वह मेरा [illegible]
तुम्हें मालूम रहे
(मैंने आज तक उसे देखा नहीं)
पर तुम से क्या छिपाऊँ,
हम पैदा हुए एक साथ
मैं किसी के गर्भ से
और वह मेरे गर्भ से
मैं तो बढ़ता गया
पर वह शायद बौना ही रहा होगा
(मेरा ख्याल है)
बौने में एक बात और है,
बोलता नहीं
केवल चलता रहता है
मेरे पीछे पीछे
कुत्ते की तरह
मेरे पदचिह्नों को सूंघता हुआ।